ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.3, July – Sept. ,2024/46

सिलोर और खेरुना, जनपद बूंदी, राजस्थान के सती स्तम्भ

प्रो0 डी0 पी0 तिवारी, प्रेसिडेंट/कुलपति जय मीनेश आदिवासी विश्वविद्यालय, कोटा
डॉ0 अनुष्का ओझा, सहायक आचार्य,श्री कल्ला जी वैदिक विश्वविद्यालय, निम्बाहेरा, राज0
प्रो0 योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, आचार्य एवं अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, का0सु0 साकेत स्नोत्तकतर महाविद्वालय, अयोध्या
https:// 10.61410/had.v19i3.203

बूंदी जनपद की बूंदी तहसील के अन्तर्गत जनपद मुख्यालय से दक्षिण–पश्चिम दिशा में आठ किलो मीटर की दूरी पर 25^{0} 22′ 46′′ उत्तरी अक्षांस एवं 75^{0} 36′ 24′′ पूरबी देशान्तर पर सीलोर गांव स्थित है। इस गांव के बीच में एक तालाब है जिसके किनारे नाम देव समाज का एक मंदिर बना है। इसके गर्भ गृह में श्री बांके बिहारी की प्रतिमा स्थापित है (चित्र–1)। मंदिर के प्रवेश द्वार की सीढ़ियों

चित्र–1, बांके बिहारी मंदिर, नाम समाज

चित्र–2, सती स्तम्भ, आछेरा समाज

के दांए पार्श्व में चार सती स्तम्भ स्थापित हैं। (चित्र–2) इनके नीचे एक चबूतरा बनाया गया है। इन पर खड़ी मुद्रा में स्त्री–पुरुष बने हैं तथा इनके ऊपरी भाग में सूर्य और चन्द्र का अंकन है।इन आकृतियों परते लमिश्रित सिंदूर का गहरा मोटा लेप लगा दिया गया है और उनको श्वेत चमकीली पन्नी से ढक दिया गया है। स्थाथीय लोग इसे पाटा कहते हैं। श्रृंगार के उद्येश्य से इन्हें चमकीले लाल रंग के वस्त्र से रक्षा सूत्र के द्वारा बांध कर ढक कर रखा गया है। समस्त ग्रामवासी इनकी देखभाल करते हुए पूजा करते हैं। नवरात्रि के अवसर पर यहां भारी संख्या में लोग आकर इनकी विशेष पूजा करते हैं। इस गांव में विभिन्न जातियों के लोग रहते हैं और अपने जाति या परिवार की सती स्त्रियों का पहचान बनाए रखने के लिए उन्होंने दीवारों पर उनका परिचय अंकित कर रखा है।

इस मंदिर के बांए पार्श्व में जोशी परिवार एवं दाधीच परिवारों के 3 सती स्तम्भ उपलब्ध हैं। इनमें से प्रथम एक ऊॅचे चबूतरे के ऊपर स्थापित है जिसके ऊपर छतरी बनीहै (चित्र–3)। सती प्रस्तर स्तम्भ पर सबसे ऊपर सूर्य और चन्द्र की आकृतियां उकेरी गई हैं। उसके नीचे दांए पार्श्व में कर बद्ध खड़ी मुद्रा में पुरुष और उसके बाम पार्श्व में हाथ जोड़ कर खड़ी मुद्रा में स्त्री की प्रतिमा बनाई गई

है। दोनों के परिधान क्रमशः पुरुषोचित एवं स्त्रियोचित हैं। इन दोनों के बीच में उनके पैरों के पास एक शिवलिंग उत्कीर्ण किया गया है (चित्र–4)। इस दृश्य के निचले भाग में हिन्दी और देवनागरी लिपि में लेख है। लेख उत्कीर्णक ने बहुत हल्की गहराई के साथ अक्षरों को उत्कीर्ण किया है जिससे उन्हें आसानी से पढ़ा नहीं जा सकता किन्तु इस पर उत्कीर्ण तिथि 1233 स्पष्ट रूप से पढ़ने योग्य है (चित्र–5)। यदि इस संवत् को विक्रम संवत् मान लिया जाय तो प्रश्नगत स्त्री के सती होने की तिथि 1291 ई0 नियत की जा सकती है किन्तु यदि इसे शक संवत् माना जाय तो यह घटना 1155 ई0 की सिद्ध होगी। 1155 से 1233 के बीच घटी बूंदी की राजनैतिक घटनाओं के संदर्भ से यह निश्चित किया जा सकेगा कि किस युध्य के कारण इस गांव के लोगों को शहीद होना पड़ा था और उनकी पत्नियों को सती होना पड़ा।

इस सती प्रस्तर स्तम्भ के बांए पार्श्व में एक विशाल छतरी के नीचे दूसरा प्रस्तर सती स्तम्भ है।

चित्र–3, ऊंचे चबूतरे पर छतरी

चित्र–4, सती प्रस्तर स्तम्भ

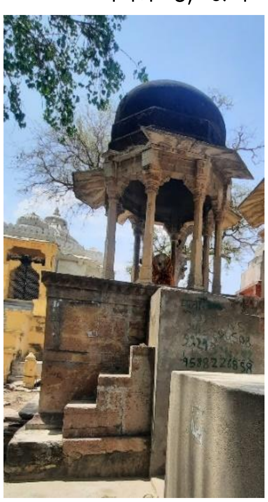

चित्र–5, चित्र–6 पारा सरपरिवार का सती स्तम्भ लेख चित्र–7, अभिलेख

यह पारासर ब्राह्मण परिवार से संबंधित बताया जाता है। इस के ऊपर संकेत रूप में गोल आकृति द्वारा सूर्य एवं अर्धवृत्त द्वारा चन्द्र को प्रदर्शित किया गया है। मध्य के वर्गाकार क्षेत्र में चलित मुद्रा में घोड़े पर सवार एक सैनिक तथा उसके बाम पार्श्व में स्त्रियो चितवस्त्र धारण कर, हाथ जोड़े एक स्त्री आकृति उत्कीर्ण की गई है (चित्र–6)। इसके अधो भाग में हिन्दी भाषा, देवनागरी लिपि में तीन पंक्तियों का एक लघु लेख है जो सिद्धि श्री संवत् से प्रारम्भ होता है और उसके आगे तिथि 1663 अंकित है। यदि यह तिथि विक्रम संवत् में है तो इसे 1645 ई0 का माना जा सकता है। इसके नीचे का अन्य विवरण आसानी से पढ़ने योग्य नहीं है (चित्र–7)।

चित्र–8

चित्र–9

चित्र–10छतरी

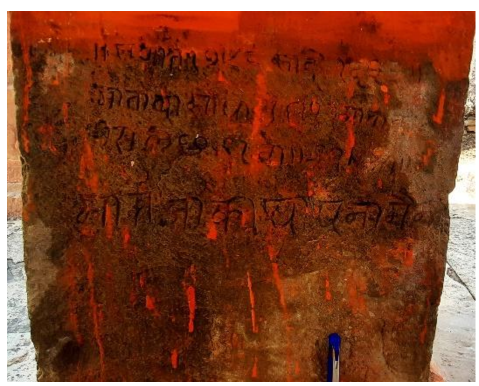

चित्र–11, सती स्तम्भ

चित्र–12, छतरी

चित्र–13, सती स्तम्भ

चित्र–14, सती स्तम्भ पर उत्कीर्ण लेख

इन दोनों सती स्तम्भों के पीछे एक अन्य छतरी के नीचे चबूतरे पर सती स्तम्भ स्थापित है (चित्र–8)। इस पर एक घुड़सवार और एक स्त्री का चित्र उकेरा गया है। ऊपर की तरफ दांए कोने पर सूर्य और चन्द्र उत्कीर्ण किए गए हैं। इन पर तेल मिश्रित सिंदूर का गहरा लेप लगाया गया है जिसे चमकीली पन्नी से ढक दिया गया है। इसके नीचे एक छोटा सा शिला लेख है जो कठिनाई से पढ़ा जा सकता है। इस पर तिथि 1623 अंकित है। शेष भाग को अक्षरों के घिस जाने के कारण इस को पढ़ा जाना दुष्कर है (चित्र–9)।

बांके बिहारी मंदिर के दांए पार्श्व में अन्य चार सती स्तम्भ छतरियों के नीचे ऊंचे–ऊंचे चबूतरों पर स्थापित हैं जिनमें से एक पर घुड़सवार सैनिक और उसके सामने प्रणाम मुद्रा में धोती धारिणी स्त्री खड़ी मुद्रा में उत्कीर्ण की गई है। इनके शिर के ऊपर वाले भाग में सूरज और चन्द्रमा साक्षी के रूप में बनाए गए हैं (चित्र 10–11)। सूर्य और चन्द्र के बीच में जटाधारी भगवान शंकर का शिरो भाग उत्कीर्ण है। इसके अधो भाग में किसी प्रकार का कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है।

चित्र–15, बावड़ी

चित्र–16, भवन के ध्वंसावशेष

मंदिर के दांए पार्श्व में एक छोटी छतरी के नीचे एक अन्य सती स्तम्भ चबूतरे पर स्थापित है (चित्र–12)। इसके शीर्ष भाग पर बीचो–बीच गणेश जी की आवक्ष आकृति उकेरी गई है (चित्र–13)। उनके बांए सूर्य एवं दांए चन्द्रमा की आकृति बनी है। मध्यवर्ती वर्गाकार भाग में दांई ओर घोड़े पर सवार एक सैनिक तथा उसके सम्मुख हाथ जोड़ कर खड़ी एक स्त्री का अंकन है। इस प्रस्तुति के नीचे वाले भाग में चार पंक्तियों में एक लेख अंकित है जो घिसे–पिटे होने के कारण पठनीय नहीं है (चित्र–14)। इस पर तिथि 1662 (1604 ई0) अनुमान पूर्वक पढ़ी जा सकती है।

इस गांव में मध्य कालीन बस्ती के अनेक अवशेष आज भी विद्यमान हैं। यहां एक तीन मंजिली बावड़ी है जिससे कभी गांव के लोग पानी पीते थे किन्तु अब भूमिगत जल की आपूर्ति होने से यह उपेक्षित है तथा खण्डहर में परिवर्तित होती जा रही है (चित्र–15) इसके आगे–पीछे कतिपय भवनों के खंडहर भी अभी बचे हैं जो कभी आलीशान भवन के रूप में यहां की शोभा बढ़ा रहे होंगे (चित्र–16)।

खेरुना नामक गांव राजस्थान के बूंदी जनपद के इसी नाम की तहसील के अन्तर्गत 25^0 25′ 44′′ उत्तरी अक्षांस एवं 75^0 34′ 27′′ पूरबी देशान्तर पर स्थित है। इस स्थल तक पंहुचने के लिए बूंदी से बिजौलिया जाने वाली पक्की सड़क से होकर हट्टीपुरा, रामनगर, जाटा न होते हुए पंहुचा जा सकता है। इस गांव के बाहर एक नाले के किनारे सड़क के दोनों पार्श्वों में छोटे–छोटे सती स्तम्भ खड़े मिलते हैं जिनका विवरण निम्नवत हैः

(चित्रः 17)

(चित्रः 18)

1. यह स्तम्भ 85.5 सेंटी मीटर लम्बा और 40.5 सेंटी मीटर चौड़ा है जिसके ऊपरी भाग पर एक पुरुष और एक स्त्री की आकृति उकेरी गई है। स्त्री आकृति पुरुष के बाम पार्श्व में है। दोनों ही खड़ी मुद्रा में हाथ जोड़े प्रदर्शित हैं। इनके शीर्ष भाग पर दोनों किनारों पर सूर्य और चन्द्र आकृतियां बनाई गई हैं अर्थात् इस घटना का साक्षी सूर्य और चन्द्रमा को बनाया गया है। इस फलक पर किसी प्रकार का कोई लेख नहीं है (चित्रः 17)।

2. दूसरा स्तम्भ 62 सेंटी मीटर लम्बा तथा 31 सेंटी मीटर चौड़ा है। इसके शीर्ष भाग पर सूर्य और चन्द्रमा प्रदर्शित हैं। उनके नीचे एक वर्गाकार भाग में अगल–बगल स्त्री पुरुष को लेटी मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। उसके बांए पार्श्व में एक स्त्री का पंजा हाथ की कोहनी तक प्रदर्शित है। इस स्तम्भ पर भी किसी प्रकार का लेख नहीं है (चित्रः18)।
3. यहां का तीसरा स्तम्भ 32 सेंटी मीटर लम्बा और 18.6 सेंटी मीटर चौड़ा है। इसके पृष्ठ भाग पर चन्द्र और सूर्य की आकृति उत्कीर्ण हैं जबकि सम्मुख भाग पर कुहनी तक हाथ के साथ पंजा बना हुआ है। इस स्थल पर दूसरे और तीसरे नम्बर के स्तम्भ एक दूसरे के आगे पीछे खड़े हैं (चित्रः 19–20)।

चित्रः 19

चित्र–20

4. सड़क के बांए पार्श्व में तार से घिरे एक उपवन में इसी प्रकार के कुछ स्तम्भ खड़े हैं। इनमें से एक 36 सेंटी मीटर चौड़ा तथा 71.50 सेंटी मीटर लम्बा है। इसमें ऊपरी भाग में एक आयताकार गड्ढा काट कर उसके अन्दर एक स्त्री और एक पुरुष को स्थानक मुद्रा में अंजलिवद्ध प्रदर्शित किया गया है। इस उत्कीर्णन में स्त्री आकृति पुरुष आकृति के बांए पार्श्व में खड़ी दिखाई गई है (चित्रः 21) (चित्रः 22)(चित्रः 21)।

चित्रः 21

चित्र–22

5. पांचवा स्तम्भ 39 सेंटी मीटर लम्बा और 26 सेंटी मीटर चौड़ा है। इसका शीर्ष भाग सपाट न होकर अर्ध वृत्ताकार है। इसके ऊपरी भागपर दांए अर्ध चन्द्र और बांए गोल आकार में सूर्य बनाए गए हैं। इन दोनों प्रतीकों के नीचे एक आयताकार भाग में अंजलिवद्ध एक स्त्री और एक पुरुष खड़ी मुद्रा में उत्कीर्ण हैं जिसमें स्त्री प्रतिमा पुरुष प्रतिमा के बाम पार्श्व में बनाई गई है। इसका पृष्ठ भाग सादा है तथा इस पर किसी प्रकार का कोइ लेख उपलब्ध नहीं है।

6. छठा स्तम्भ 22 सेंटी मीटर चौड़ा तथा 24 सेंटी मीटर लम्बा है। इसका शीर्ष भाग अर्धवृत्ता कर है तथा स्तम्भ के ऊपरी भाग पर सूरज और चन्द्रमा बनाए गए हैं। उनके नीचे एक आयत के अन्दर दोनों हाथ जोड़कर खड़े एक युगल की आकृति उत्कीर्ण है। पुरुष को अधोवस्त्र के रूप में धोती पहने दिखाया गया है जबकि स्त्री को घुटने के ऊपर तक घाघरा पहने दिखाया गया है। इस स्तम्भ पर किसी प्रकार का लेख नहीं है।इसका पृष्ठ भाग सादा है (चित्रः 23)।
7. सातवां स्तम्भ 55 सेंटी मीटर लम्बा तथा 40 सेंटी मीटर चौड़ा है। इसका शीर्ष भाग किंचित टूटा है जिसके नीचे एक आयत में एक स्त्री और एक पुरुष की आकृति बनी है। पुरुष के बांए हाथ में एक दण्ड है जबकि स्त्री अंजलिवद्ध उसके बगल में खड़ी है (चित्र:24) । इस स्तम्भ पर सूर्य और चन्द्र की आकृति स्पष्ट नहीं है। इस स्तम्भ पर काई लगे होने के कारण आकृतियां कुछ धुंधली हो गई हैं। इस पर कोई लेख नहीं है तथा इसका पृष्ठ भाग सादा है।
8. आठवां स्तम्भ 100 सेंटी मीटर लम्बा तथा 34 सेंटी मीटर चौड़ा है। इसका शीर्ष भाग समतल है जिसके नीचे एक आयत में एक स्त्री और एक पुरुष की आकृति बनी है। दोनों ही हाथ जोड़ कर खड़े हैं। इसका निचला भाग जो जमीन के अन्दर गाड़ा जाता है नुकीला बनाया गया है (चित्रः 25)।

चित्रः 24

चित्र–25

9. नवां स्तम्भ 77 सेंटी मीटर लम्बा और 38 सेंटी मीटर चौड़ा है। इसका शीर्ष समतल है। इसके ऊपरी भाग में एक आयताकार ताखे में एक स्त्री को खड़ी मुद्रा में बनाया गया है जिसके दांए हाथ में एक दण्ड (धनुष ?) और बांए हाथ में फूल सा कुछ प्रदर्शित है। स्त्री ने कटि सूत्र एवं अधोवस्त्र (चित्रः 26) (चित्रः 27) पहन रखा है। इस स्तम्भ पर सूर्य एवं चन्द्र की आकृतियां नहीं बनी हैं (चित्रः 26)।

चित्रः 26

चित्र–27

10. दसवां स्तम्भ 67 सेंटी मीटर लम्बा तथा 22.33 सेंटी मीटर चौड़ा है। इसका शीर्ष भाग समतल किन्तु टूटा हुआ है। इसके नीचे एक छिछले आयताकार ताखे में एक स्त्री को जिसके दांए हाथ में धनुष तथा बांए हाथ में चंवर है,खड़ी मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। इस स्तम्भ पर न तो सूर्य एवं चन्द्र का अंकन है न ही किसी प्रकार का लेख (चित्रः 27)।

चित्रः 28

चित्र–29

11. ग्यारहवां स्तम्भ वर्गाकार है। इसकी लम्बाई एवं चौड़ाई दोनों 51.30 सेंटी मीटर है। इस पर एक पुरुष और एक स्त्री हाथ जोड़े खड़े हैं। इनके दांए सूर्य और चन्द्र की आकृति बनी है जबकि (चित्रः 29)(चित्रः 28) बांए पार्श्व में देवनागरी में नाम जतन सिंह लिखा जो बड़ी कठिनाई से पढ़ने योग्य है (चित्रः 28)।
12 बारहवा स्तम्भ 95 सेंटी मीटर लम्बा और 35 सेंटी मीटर चौड़ा है। इसका शीर्ष भाग लगभग समतल है। इसके ऊपरी भाग में सूर्य और चन्द्र बनाए गए हैं जिसके नीचे के आयताकार ताखे में एक घुड़सवार सैनिक जिसके ऊपर उठे दांए हाथ में कटार और बांए ऊपर उठे हाथ में ढाल है। इसके सामने एक स्त्री हाथ जोड़कर खड़ी है (चित्रः 29)।

स्थानीय लोगों द्वारा यह बताया जाता है कि इस क्षेत्र में अन्य ग्रामों में भी इसी प्रकार के स्मारक प्रस्तर स्तम्भ मिलते हैं, जिन्हें सती स्तम्भ के नाम से जाना जाता है। राजस्थान के बाहर भी इस प्रकार की संरचनाएं प्राप्त होती हैं[1–5]। मृतपति के शव के साथ विधवा द्वारा आत्म दाह करने की परम्परा के साहित्यिक संकेत ऋग्वैदिक[6] काल से मिलने लगते हैं जिनकी प्राचीन भारतीय साहित्य में यत्र–तत्र प्रशंसा भी की जाती दिखाई देती है।इसके पीछे स्त्री के अपने पति के प्रति परायणता की पराकाष्ठा माना जाता रहा है[7]। कुछ स्त्रियां पति के अभाव में भावी जीवन की कठिनाइयों से मुक्ति पाने की इच्छा से इस मार्ग का अनुशरण करती थीं[8]। मध्य काल में युध्यों में पति के मारे जाने पर विदेशी मुस्लिम आक्रान्ताओं के चंगुल से बचने के लिए राज परिवारों की रानियां आत्मदाह कर लेती थीं। कभी कभी तो पराजय सुनिश्चित होने की संभावना पर ही ये स्त्रियां जौहर विधि से प्राण त्याग कर देती थीं। इनके इस साहसिक कृत्य को समाज में बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता था और उनकी यादगार में इस प्रकार के स्तम्भ स्थापित किए जातेथे। पुरातात्विक साक्ष्य की दृष्टि से आज भी एरण से प्राप्त गुप्त कालीनगोपराज का लेख इस प्रथा का सबसे प्राचीन साक्ष्य है जिसमें उसकी पत्नी द्वारा मृत पति के शव के साथ आत्मदाह (सती होने) करने का विवरण इस प्रकार दिया गया है[9]। यह प्रथा समय–समय पर भारत ही नहीं विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं में भी प्रचलन में होने के साक्ष्य मिलते हैं[10]।

संदर्भः

1. Thakre Mayur, Immortalizing Death- The documentation and Analysis of Selected Memorial Stones in the former undivided Thane District, Maharashtra, https://www.hindu.com/news/national/kerala/this-biennale-is-devoted-to-tribal-art-forms/article66759877.ece
2. Settar S. and Sontheimer G.D. 1982, Memorial Stones: A Study of their Origin, Significance and Variety Dharwad: Karnataka University.
3. Shetti B.V., 1981-84, Some Memorial Stones in Bombay, Journal of the Asiatic Society of Bombay, Vol. 56-59, Bombay: Asiatic Society of Mumbai.
4. Thiagarajan Kamala, India’s Sati Stones Commemorate a Macabre Historical Practice Their challenging legacy has complicated preservation and study,

   https://www.atlasobscura.com/articles/what-is-sati, Nov. 30, 2020.

5. Mishra Om Prakash and S. Pradhan, Sati Memorials and Cenotaphs of Madhya Pradesh- A Survey, Proceedings of the Indian History Congress, Vol. 62, 2001, PP 1013-1019.
6. ऋग्वेद, 10.18. 7–9.

इमानारीरविधवाः सुपत्नीरांजनेनसर्पिषासंविशन्तु।अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्नाआरोहन्तुजनयो योनिमग्रे।।
उदीर्ष्वनार्यभिजीवलोकंगतासुमेतमुप शेष एहि।हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदंपत्युर्जनित्वमभिसंबभूथ।।
धनुर्हस्तादाददानो मृतस्यास्मे क्षत्राय वर्चसेबलाय। अत्रैव त्वामिहवयंसुवीराविश्वाः स्पृधोअभिमातीर्जयेम्।।; अथर्ववेद 18.3.1; शौनकीय बृहद्देवता, हिन्दीअनुवादरामकुमारराय, 1963, पृ0 217–19; महाभारत, आदिपर्व, 116.29–31, 117. 28–29, 90.75, 118.22.

7. वशिष्ठ स्मृति, 5.66–73
आर्तार्तेमुदिते हृष्टाप्रोषितेमलिना कृशा। मृते मृयेत् या पत्यौसा स्त्री ज्ञेयापतिव्रता......।।

8. महाभारत, आदि पर्व, 146.10 एवं आगे।

9. एरण स्तम्भ लेख, गुप्त संवत् 191 (510 ई0), श्री भानु गुप्तोजग तिप्रवीरोराजामहान्पार्थसमोऽति शूरः। तेनाथ सार्द्धन्त्विहगोपराजोमित्रानु (गत्येन) किलानुयातः (3) कृत्वा च युद्धं सुमहत्प्रका शंस्वर्ग्गंग तो दिव्य नरेन्द्र कल्पः। भक्ता नुरक्ता च प्रिया च कान्ता भार्या वलग्नानुगताऽग्निराशिम्।।(4)

10. विस्तार के लिए द्रष्टव्य, तिवारी देवी प्रसाद, प्राचीन भारत में विधवाएं (प्रारम्भ से 1200 ई0 पर्यन्त), तरुण प्रकाशन, लखनऊ, 1994, पृ0 15–75.